डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बीए प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, पत्र आठ

काव्य हेतु

कारण – कार्य और साधन – साध्य के नियमानुसार हर कार्य का कारण होता है अतः काव्य का भी कारण होगा, जिसे काव्यशास्त्रियों ने काव्य – हेतु की संज्ञा दी। संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार वादी आचार्य भामह ने सर्वप्रथम काव्यहेतु की चर्चा की है। उन्होंने 'प्रतिभा' को काव्यरचना का मूल हेतु स्वीकार किया तथा व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य की उत्कृष्टता के हेतु के रूप में स्वीकार किया है। भामह ने इस प्रकार कुल तीन हेतुओं को माना है जिनमें प्रतिभा को सर्वाधिक महत्व दिया है।

दूसरे अलंकारवादी आचार्य दंडी ने भी काव्य के तीन हेतु – प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को माना है, परंतु इन्होंने प्रतिभा की तुलना में व्युत्पत्ति और अभ्यास को अधिक महत्व दिया है, उनका मानना है कि प्रतिभा के अभाव में भी व्युत्पत्ति और अभ्यास द्वारा काव्य – रचना संभव है।

तीसरे अलंकारवादी आचार्य रुद्रट ने भी काव्य रचना के तीन हेतु माने हैं – शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास। शक्ति से उनका तात्पर्य प्रतिभा है। इन्होंने शक्ति अर्थात प्रतिभा के दो भेद माने हैं – सहजा और उत्पाद्या। इन्होंने भी भामह की तरह प्रतिभा को अधिक महत्व दिया है और उसे काव्य का मूल हेतु स्वीकार किया है। रुद्रट का मानना है कि व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा के परिष्कारक हैं।

रीतिवादी आचार्य वामन ने काव्य रचना में तीन प्रकार के हेतु माने हैं –

लोकज्ञान, शास्त्र ज्ञान तथा प्रकीर्ण। प्रकीर्ण के छः भेद बताए हैं -1.लक्ष्यतत्व अर्थात अन्य कवियों की रचनाओं का अध्ययन 2. अभियोग अर्थात अभ्यास 3. वृद्ध सेवा अर्थात ज्ञान वृद्धों का संग 4. अवेक्षण अर्थात अपनी रचना के गुण – दोषों की निवृत्ति 5. प्रतिमान अर्थात नैसर्गिक प्रतिभा 6. अवधान अर्थात चित्त की एकाग्रता

वामन की उक्तियों से स्पष्ट है कि उन्होंने व्युत्पत्ति को प्रमुख तथा प्रतिभा और अभ्यास को गौण स्थान दिया है।

ध्वनि – सम्प्रदाय के आचार्य आनंदवर्धन ने काव्य हेतुओं के रूप में प्रतिभा और व्युत्पत्ति का उल्लेख किया है। उन्होंने प्रतिभा को व्युत्पत्ति से अधिक महत्व दिया है। उनका कथन है –

"व्युत्पत्ति के अभाव का दोष प्रतिभा द्वारा तो ढका जाता है परंतु प्रतिभा के अभाव का दोष व्युत्पत्ति नहीं ढँक सकती।"

राजशेखर शक्ति को प्रतिभा से भिन्नार्थ में ग्रहण करते हुए शक्ति में प्रतिभा और व्युत्पत्ति का समन्वय माना है। उन्होंने प्रतिभा के भेदोपभेद किये हैं और उनके आधार पर कवियों के भी भेद किये हैं। अंततः उन्होंने प्रतिभा,

अभ्यास और देवानुग्रह की एकत्र स्थिति दुर्लभ मानी है। इन्होंने काव्य के मूल्य हेतु के रूप में शक्ति (प्रतिभा और व्युत्पत्ति का समन्वित रूप) और अभ्यास को स्वीकार किया है।

मम्मटाचार्य ने भी पूर्ववर्ती आचार्यों के मतों का समन्वय करते हुए काव्य के तीन हेतु माने हैं - शक्ति (प्रतिभा), निपुणता (लोक, शास्त्र ज्ञान) तथा अभ्यास। इन हेतुओं में प्रतिभा को सर्वाधिक महत्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि प्रतिभा के अभाव में काव्य रचना संभव नहीं है। साथ ही इन्होंने तीनों के सम्मिलित रूप को एक ही माना है।

आचार्य हेमचंद्र ने प्रतिभा को काव्य का हेतु तथा व्युत्पत्ति और अभ्यास को प्रतिभा का परिष्कारक माना है। पण्डितराज जगन्नाथ भी प्रतिभा को काव्य का मूल हेतु तथा व्युत्पत्ति और अभ्यास को प्रतिभा के उपकारक मानते हैं। रीतिकालीन आचार्यों ने भी संस्कृत के आचार्यों का अनुसरण करते हुए शक्ति, निपुणता और अभ्यास का ही काव्य हेतुओं के रूप में उल्लेख किया है।

आधुनिक साहित्यकारों ने काव्यहेतु पर अपने विचार प्रस्तुत नहीं किये हैं। मनोवैज्ञानिकों ने इस विषय पर अवश्य विचार प्रस्तुत किये हैं। मनोविज्ञान में प्रतिभा को सहजा न मानकर उत्पाद्या माना गया है।